ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

बकरी पालन: किसानों की सतत आय का सशक्त साधन

जुई लोध[1], रश्मि कुमारी[1], हर्षिता रानी, दिवाकर मिश्रा[1] एवं दिनेश कुमार[2]*

[1]सहायक प्राध्यापक, संजय गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ डेयरी टेक्नोलॉजी, पटना, बिहार - 800014

[2]*सहायक प्राध्यापक, राँची पशु चिकित्सा विज्ञान महाविद्यालय, बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, राची - 834006

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ छोटे और सीमांत किसान बड़ी संख्या में निवास करते हैं। छोटे और सीमांत किसानों की अर्थव्यवस्था में पशुपालन की महत्वपूर्ण भूमिका है। पशुपालन के अंतर्गत मवेशियों और खास तौर पर भेड़ और बकरियों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। बकरियों का दूध घर में इस्तेमाल के लिए कभी भी निकाला जा सकता है। ग्रामीण भारत के लाखों गरीब किसानों और भूमिहीन मजदूरों को अतिरिक्त आय और आजीविका प्रदान करने में बकरी की महत्वपूर्ण भूमिका है। छोटे जुगाली करने वाले पशुओं का पालन स्वरोजगार सुनिश्चित करता है और सूखे और अकाल जैसी संकटपूर्ण स्थितियों में सहायता प्रदान करता है। किसानों के लिए कम पूँजी में अधिक लाभ देने वाले उद्यमों की अत्यंत आवश्यकता है। बकरी पालन ऐसा ही एक उद्यम है, जिसे "गरीब आदमी की गाय" भी कहा जाता है। बकरी पालन न केवल कम निवेश में शुरू किया जा सकता है, बल्कि यह किसानों को नियमित आय, पोषण सुरक्षा और रोजगार के अवसर भी प्रदान करता है। बदलते जलवायु परिदृश्य और कृषि जोखिमों के बीच बकरी पालन किसानों की आय को स्थिर और सतत बनाने का एक प्रभावी साधन बनकर उभरा है।

बकरी पालन की संभावनाएँ

भारत विश्व में बकरी आबादी की दृष्टि से अग्रणी देशों में शामिल है। बकरी पालन की सबसे बड़ी विशेषता इसकी अनुकूलन क्षमता है। बकरियाँ सूखा, अर्ध-शुष्क तथा पहाड़ी क्षेत्रों में भी आसानी से पाली जा सकती हैं। कम चारे में जीवित रहने, रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक होने तथा तेजी से प्रजनन करने के कारण यह व्यवसाय छोटे किसानों, भूमिहीन मजदूरों और महिलाओं के लिए अत्यंत लाभकारी है। सरकार की विभिन्न योजनाएँ, जैसे राष्ट्रीय पशुधन मिशन, बकरी पालन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

प्रमुख बकरी नस्लें

भारत में बकरियों की कई उन्नत नस्लें पाई जाती हैं, जो मांस, दूध और प्रजनन क्षमता के लिए जानी जाती हैं।

- ✓ **जमुनापारी** – उत्तर प्रदेश की प्रसिद्ध नस्ल, मुख्यतः दूध उत्पादन के लिए।
- ✓ **बीटल** – पंजाब क्षेत्र की नस्ल, दूध और मांस दोनों के लिए उपयोगी।
- ✓ **बरबरी** – छोटे कद की नस्ल, शीघ्र प्रजनन क्षमता के लिए प्रसिद्ध।
- ✓ **ब्लैक बंगाल** – पूर्वी भारत की नस्ल, उच्च गुणवत्ता वाले मांस और खाल के लिए जानी जाती है।
- ✓ **सिरोही** – राजस्थान की नस्ल, शुष्क क्षेत्रों के लिए उपयुक्त।

उचित नस्ल चयन से बकरी पालन की उत्पादकता और लाभप्रदता में उल्लेखनीय वृद्धि की जा सकती है।

बकरी का दूध

बकरी का दूध पोषण की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। इसमें वसा कण छोटे होते हैं, जिससे यह आसानी से पच जाता है। बकरी का दूध बच्चों, वृद्धों और एलर्जी से ग्रस्त व्यक्तियों के लिए विशेष रूप से लाभकारी है। इसमें कैल्शियम, फॉस्फोरस और विटामिन्स प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। औषधीय गुणों के कारण बकरी के दूध की बाजार में मांग निरंतर बढ़ रही है, जिससे किसानों को बेहतर मूल्य प्राप्त होता है।

बकरी का मांस

बकरी का मांस (चेवॉन) भारत में अत्यधिक लोकप्रिय है। यह अन्य लाल मांस की तुलना में कम वसा और कोलेस्ट्रॉल युक्त होता है, जिससे स्वास्थ्य के प्रति जागरूक उपभोक्ताओं में इसकी मांग अधिक है। त्यौहारों, विवाह समारोहों और धार्मिक अवसरों पर बकरी के मांस की खपत विशेष रूप से बढ़ जाती है। उच्च बाजार मूल्य और निरंतर मांग बकरी पालन को आय का विश्वसनीय स्रोत बनाती है।

मूल्य संवर्धन

बकरी पालन में मूल्य संवर्धन के माध्यम से किसानों की आय में कई गुना वृद्धि की जा सकती है। बकरी के दूध से पनीर, दही, घी और फ्लेवर्ड मिल्क जैसे उत्पाद बनाए जा सकते हैं। मांस से सॉसेज, पैटी और पैकेज्ड मीट उत्पाद तैयार किए जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त बकरी की खाल से चमड़े के उत्पाद तथा गोबर से जैविक खाद का निर्माण भी अतिरिक्त आय के स्रोत प्रदान करता है।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

सौंदर्य एवं औषधीय उत्पाद (Cosmetic Products)

बकरी के दूध से बने सौंदर्य उत्पादों की मांग वैश्विक स्तर पर तेजी से बढ़ रही है। बकरी के दूध से साबुन, क्रीम, लोशन और शैम्पू जैसे उत्पाद बनाए जाते हैं, जो त्वचा के लिए अत्यंत लाभकारी माने जाते हैं। इनमें प्राकृतिक मॉइस्चराइज़र और एंटी-बैक्टीरियल गुण होते हैं। ग्रामीण स्तर पर लघु उद्योग के रूप में इन उत्पादों का निर्माण कर किसान और स्वयं सहायता समूह अच्छी आय अर्जित कर सकते हैं।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि बकरी पालन किसानों की सतत आय का एक सशक्त और व्यवहारिक साधन है। कम निवेश, अधिक लाभ, त्वरित प्रतिफल और बहुआयामी उपयोगिता के कारण यह उद्यम ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करता है। यदि वैज्ञानिक पद्धतियों, उचित नस्ल चयन, संतुलित पोषण और मूल्य संवर्धन पर विशेष ध्यान दिया जाए, तो बकरी पालन न केवल किसानों की आय बढ़ा सकता है, बल्कि आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य को भी साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।